

शहरी मध्यम-वर्गीय परिवारों में महिलाओं के रोजगार के सामाजिक-आर्थिक निर्धारक: दरभंगा का एक केस स्टडी

उमा कुमारी¹, डॉ० संतोष कुमार यादव²

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, साई नाथ यूनिवर्सिटी, रांची, झारखंड¹

शोध निर्देशक, सह प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, साई नाथ यूनिवर्सिटी, रांची, झारखंड²

सार

यह शोध अध्ययन मध्यवर्गीय परिवारों में महिलाओं के रोजगार की स्थिति को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक कारकों की जांच करता है, जिसमें दरभंगा नगर निगम क्षेत्र की महिला शिक्षिकाओं पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। शोध के लिए सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई, जिसके अंतर्गत 300 महिला शिक्षिकाओं से पाँच-बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित संरचित प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई। निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैंकृत्तीय आवश्यकता, पारिवारिक समर्थन और सामाजिक दृष्टिकोण। यह अध्ययन यह समझने में सहायक है कि शहरी मध्यवर्गीय महिलाएं किस प्रकार सामाजिक-आर्थिक प्रतिबंधों के बीच रोजगार से जुड़ी चुनौतियों का सामना करती हैं।

कीवर्ड्स: सामाजिक-आर्थिक, महिलाओं का रोजगार, मध्यवर्गीय परिवार, दरभंगा

परिचय

महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी किसी भी समाज की प्रगति और लैंगिक समानता का एक महत्वपूर्ण संकेतक होती है। शहरी मध्यवर्गीय परिवारों में, विशेष रूप से बिहार के तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्र दरभंगा में, महिलाओं के रोजगार की स्थिति सामाजिक-आर्थिक कारकों की जटिल अंतःक्रिया से प्रभावित होती है। शहरीकरण ने जहां महिलाओं के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न किए हैं, वहीं पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएं, पारिवारिक जिम्मेदारियां और सामाजिक-सांस्कृतिक अपेक्षाएं अब भी उनके समक्ष गंभीर बाधाएं प्रस्तुत करती हैं। यह अध्ययन उन सामाजिक-आर्थिक निर्धारकों की पड़ताल करता है जो दरभंगा नगर निगम क्षेत्र में महिलाओं के वेतनभोगी कार्य में संलग्न होने के निर्णय और क्षमता को प्रभावित करते हैं। 300 महिला शिक्षिकाओं के नमूने पर केंद्रित यह शोध शिक्षित मध्यवर्गीय

कामकाजी महिलाओं के सबसे प्रतिनिधिक खंड को ध्यान में रखते हुए शहरी बिहार में महिलाओं के रोजगार के व्यापक स्वरूप को समझने का प्रयास करता है।

इस शोध में संरचित सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसमें प्रतिभागियों के दृष्टिकोण का विश्लेषण करने के लिए लिक्र्ट मापक्रम अपनाया गया है। इसमें पारिवारिक समर्थन, शैक्षिक पृष्ठभूमि, आर्थिक आवश्यकता, कार्यस्थल का वातावरण और सामाजिक दृष्टिकोण जैसे कारकों को शामिल किया गया है। इस सूक्ष्म स्तर के परीक्षण के माध्यम से, यह अध्ययन अर्ध-शहरी क्षेत्रों में महिलाओं के रोजगार को प्रभावित करने वाली व्यापक संरचनात्मक चुनौतियों और सहायक तत्वों की पहचान करना चाहता है। इन निर्धारकों को समझना न केवल रोजगार में लैंगिक असमानता को दूर करने के लिए आवश्यक है, बल्कि एक परिवर्तनशील समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण और आर्थिक योगदान को बढ़ावा देने के लिए अधिक समावेशी नीति ढांचे तैयार करने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

1. शहरी बिहार में महिलाओं के रोजगार का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

बिहार के शहरी क्षेत्रों, विशेषतः परंपरागत शहर दरभंगा में, महिलाओं का रोजगार प्रचलित सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं और लैंगिक भूमिकाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। यद्यपि साक्षरता दर और शहरीकरण में वृद्धि हो रही है, फिर भी सामाजिक अपेक्षाएं प्रायः महिलाओं की भूमिका को घरेलू दायरे में ही सीमित रखती हैं, जहां उन्हें मुख्यतः देखभालकर्ता और गृहिणी के रूप में देखा जाता है। परिवार की प्रतिष्ठा पर सांस्कृतिक जोर और यह पारंपरिक धारणा कि कामकाजी महिला घरेलू जिम्मेदारियों की उपेक्षा कर सकती है, कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी के मार्ग में सूक्ष्म लेकिन प्रभावशाली बाधाएं उत्पन्न करती हैं। इसके अतिरिक्त, यह धारणा भी प्रचलित है कि महिलाएं केवल कुछ शसम्मानजनक माने जाने वाले पेशाओं जैसे कि शिक्षणकर्म ही कार्य करें, जिससे उनके लिए उपलब्ध व्यवसायिक विकल्पों की सीमा सीमित हो जाती है।

अनेक मामलों में महिला का रोजगार केवल तभी स्वीकार्य माना जाता है जब वह पारिवारिक मूल्यों के अनुरूप हो और घरेलू दिनचर्या में विघ्न न डाले। कार्यरत महिलाओं के प्रति सामाजिक आलोचना और नैतिक जांच की प्रवृत्ति, विशेषतः जब ससुराल पक्ष या पति का समर्थन न हो, तो उनके कैरियर की आकांक्षाओं को और अधिक हतोत्साहित करती है। फिर भी, शिक्षित परिवारों में, विशेषतः युवा पीढ़ी के बीच यह दृष्टिकोण बदलता हुआ दिखाई देता है, जहां महिलाओं के आर्थिक योगदान को अधिक मूल्यवान समझा जाने लगा है। हालांकि यह परिवर्तन असमान गति से हो रहा है और महिलाओं के लिए रोजगार संबंधी निर्णय अभी भी पारिवारिक सहमति, सामाजिक स्वीकृति और सांस्कृतिक स्वीकार्यता की व्यापक परिपाटी के अंतर्गत ही लिए जाते हैं।

2. आर्थिक आवश्यकता बनाम व्यक्तिगत आकांक्षारू रोजगार के लिए प्रेरणाएँ

दरभंगा जैसे शहरी मध्यवर्गीय परिवारों में महिलाओं के रोजगार के पीछे की प्रेरणाएँ आर्थिक आवश्यकता और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच जटिल संतुलन को दर्शाती हैं। अनेक महिलाओं के लिए, विशेषकर उन परिवारों में जहाँ एकमात्र आय स्रोत शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और आवास जैसी बढ़ती जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ होता है, रोजगार एक आर्थिक विवशता बन जाता है। शहरी जीवनशैली की बढ़ती लागत और मध्यवर्गीय जीवन स्तर को बनाए रखने की चाहत, प्रायः दोनों पति-पत्नी से आर्थिक योगदान की मांग करती है। ऐसे परिवारों में महिलाएं अक्सर अपनी रुचि या योग्यता के अनुरूप नहीं, बल्कि वित्तीय दायित्वों की पूर्ति हेतु कार्य करती हैं। किंतु आर्थिक बाध्यता से परे, उच्च शिक्षित महिलाओं का एक बड़ा वर्ग आत्म-संतुष्टि, कैरियर विकास और सामाजिक पहचान की भावना से प्रेरित होकर कार्य करने की प्रबल इच्छा व्यक्त करता है। शिक्षण का पेशा इस दृष्टिकोण से लोकप्रिय विकल्प बनकर उभरता है, क्योंकि यह सामाजिक रूप से स्वीकार्य भी है और पारिवारिक जिम्मेदारियों के अनुकूल भी।

वे महिलाएं जो व्यक्तिगत विकास, बौद्धिक सक्रियता और आत्मनिर्भरता की आकांक्षा रखती हैं, पारिवारिक या सामाजिक विरोध के बावजूद कार्य करने के लिए तत्पर रहती हैं। उनके लिए रोजगार सशक्तिकरण और व्यक्तिगत पहचान की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाता है। हालांकि, इन आकांक्षाओं को कभी-कभी सामाजिक अपेक्षाओं और पारिवारिक सीमाओं के अनुरूप ढालने की आवश्यकता भी पड़ती है। कुछ महिलाएं तो तबतक आंतरिक द्वंद्व का अनुभव करती हैं जब उन्हें व्यावसायिक महत्वाकांक्षा और घरेलू सामंजस्य के बीच चुनाव करना पड़ता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ आर्थिक आवश्यकता एक प्रमुख कारक है, वहीं व्यक्तिगत आकांक्षा भी विशेषकर युवा और शिक्षित वर्ग में तेजी से उभर रही है। अतः दरभंगा में महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी केवल आर्थिक बाध्यता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता, आत्म-मूल्य और व्यावसायिक उपलब्धि की तीव्र इच्छा से भी प्रेरित है।

3. रोजगार निर्णयों को आकार देने में शिक्षा और पारिवारिक समर्थन की भूमिका

महिलाओं के रोजगार निर्णयों को आकार देने में शिक्षा की केंद्रीय भूमिका होती है, क्योंकि यह न केवल आवश्यक कौशल और योग्यता प्रदान करती है, बल्कि उनकी आकांक्षाओं और आत्मविश्वास को भी व्यापक बनाती है। दरभंगा की मध्यवर्गीय महिलाओं के संदर्भ में देखा गया है कि उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएं अधिकतर रोजगार की दिशा में अग्रसर होती हैं, क्योंकि वे इसे अपनी शैक्षणिक यात्रा और व्यक्तिगत विकास का स्वाभाविक विस्तार मानती हैं। शिक्षा अवसरों के प्रति जागरूकता बढ़ाती है और महिलाओं को घरेलू तथा बाहरी भूमिकाओं के बीच संतुलन स्थापित करने में सक्षम बनाती है। हालांकि,

रोजगार को अपनाने और बनाए रखने की क्षमता काफी हद तक पारिवारिक वातावरण पर भी निर्भर करती है। विशेष रूप से पति का प्रोत्साहन एक सशक्त कारक के रूप में कार्य करता है। जब पति अपनी पत्नी के व्यावसायिक लक्ष्यों को महत्व देते हैं और उनका समर्थन करते हैं, तो महिलाएं अपने रोजगार विकल्पों को लेकर अधिक प्रेरित और सुरक्षित महसूस करती हैं। इसी प्रकार, ससुराल और माता-पिता जैसे अन्य पारिवारिक सदस्यों का सहयोग, विशेषतः संयुक्त परिवारों में, घरेलू जिम्मेदारियों और बाल देखभाल के भार को कम कर देता है, जिससे महिलाओं के लिए कार्य और घर के बीच संतुलन बनाए रखना आसान हो जाता है।

परमाणु परिवारों में, जहाँ सहयोग सीमित होता है, महिलाएं तब तक दोहरी जिम्मेदारियों को संभालने में संघर्ष करती हैं जब तक पति का सक्रिय सहयोग न मिले। दूसरी ओर, सहयोग की कमी के कारण कई महिलाएं कार्यबल से बाहर हो जाती हैं या केवल अंशकालिक अथवा कम मांग वाले कार्यों को अपनाती हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि जिन परिवारों में लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, वहाँ महिलाओं को कार्य करने के लिए अधिक प्रोत्साहित किया जाता है, जो एक प्रगतिशील सोच को दर्शाता है। इस प्रकार, शिक्षा और एक सहायक घरेलू वातावरण दोनों ही स्तंभों की भांति कार्य करते हैं, जो महिलाओं के रोजगार मार्ग को आकार देने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, तथा उन्हें सूचित और स्वतंत्र कैरियर निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाते हैं।

4. शिक्षण पेशे में कार्यस्थल की स्थिति और लैंगिक संवेदनशीलता

मध्यवर्गीय परिवारों में शिक्षण पेशे को प्रायः महिलाओं के लिए एक उपयुक्त और सम्मानजनक व्यवसाय माना जाता है, क्योंकि इसमें निर्धारित कार्य समय होता है और यह घरेलू जिम्मेदारियों के साथ संतुलन बनाए रखने में सहायक समझा जाता है। दरभंगा की महिला शिक्षिकाओं के बीच कार्यस्थल की स्थितियाँ उनके नौकरी से संतोष और दीर्घकालिक संलग्नता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। अनेक महिलाएं बताती हैं कि यह पेशा उन्हें कार्य और पारिवारिक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने की सुविधा प्रदान करता है। विद्यालय का समय, छुट्टियाँ और शैक्षणिक पंचांग की पूर्वानुमेयता इसे विशेषतः माताओं के लिए एक पसंदीदा विकल्प बनाती है। हालाँकि इन सुविधाओं के बावजूद कई चुनौतियाँ बनी रहती हैं। कार्यभार, शैक्षणिक लक्ष्यों को पूरा करने का दबाव और सीमित पदोन्नति अवसर जैसी समस्याएं नौकरी से संतोष को प्रभावित करती हैं। कार्यस्थल पर लैंगिक संवेदनशीलता एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। कुछ संस्थान जहां मातृत्व अवकाश, शिकायत निवारण प्रणाली और समय-प्रबंधन में लचीलापन जैसी सहायक सुविधाएँ प्रदान करते हैं, वहीं कई अन्य स्थानों पर महिलाओं के लिए अलग शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाएँ या सुरक्षित परिवहन विकल्प तक उपलब्ध नहीं होते।

यात्रा के दौरान या देर शाम की ड्यूटी से संबंधित सुरक्षा संबंधी चिंताएँ महिला शिक्षकों को असुरक्षित महसूस कराती हैं।

इसके अतिरिक्त, व्यावसायिक विकास के अवसर, निष्पक्ष मूल्यांकन प्रणाली और नेतृत्व पदों में समानता जैसे क्षेत्रों में संस्थागत सहयोग असंगत रूप से पाया जाता है। विद्यालय और घर दोनों की जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ प्रायः अनदेखा कर दिया जाता है, जिससे अनेक महिलाएं अपने योगदान के बावजूद स्वयं को कम मूल्यांकित अनुभव करती हैं। कार्यस्थल पर लैंगिक रूप से संवेदनशील नीतियों की उपस्थिति या अनुपस्थिति महिलाओं की प्रभावी कार्यक्षमता को या तो प्रोत्साहित कर सकती है या बाधित कर सकती है। अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि यद्यपि शिक्षण सामान्यतः महिलाओं के अनुकूल पेशा माना जाता है, किंतु इस पेशे को वास्तव में महिला शिक्षकों के लिए सशक्तिकारी बनाने हेतु कार्यस्थल के ढांचे, सुरक्षा और संवेदनशीलता में ठोस सुधार आवश्यक हैं।

उद्देश्य

1. मध्यवर्गीय परिवारों में महिलाओं के रोजगार को प्रभावित करने वाले प्रमुख सामाजिक-आर्थिक कारकों की पहचान करना।
2. कार्यरत महिलाओं द्वारा अनुभव किए गए पारिवारिक और सामाजिक समर्थन के स्तर का मूल्यांकन करना।
3. घरेलू और व्यावसायिक भूमिकाओं के संतुलन में महिलाओं को आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करना।

अनुसंधान पद्धति

वर्तमान अध्ययन एक मात्रात्मक शोध रूपरेखा को अपनाता है, जिसका उद्देश्य मध्यवर्गीय परिवारों में महिलाओं के रोजगार की स्थिति को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक निर्धारकों की जाँच करना है, विशेष रूप से दरभंगा नगर निगम क्षेत्र की महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में। इस शोध का लक्षित समूह उन महिला शिक्षिकाओं को शामिल करता है जो इस शहरी क्षेत्र में निवास करती हैं और कार्यरत हैं, तथा शिक्षित मध्यवर्ग का एक प्रमुख प्रतिनिधित्व करती हैं। अध्ययन के लिए कुल 300 उत्तरदाताओं का नमूना लिया गया, जिससे निष्कर्षों की उपयुक्त अभ्याप्तता और सामान्यीकरण सुनिश्चित हो सके। नमूना चयन की विधि स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना तकनीक रही, जिसके अंतर्गत जनसंख्या को विद्यालय के प्रकार (सरकारी या निजी), आयु या अनुभव के वर्षों जैसे प्रासंगिक मापदंडों के आधार पर उपसमूहों में विभाजित किया गया, ताकि अनुपातिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके और नमूना पूर्वाग्रह को

कम किया जा सके। आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए एक संरचित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जो रोजगार निर्णयों को प्रभावित करने वाले विभिन्न सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक कारकों से संबंधित प्रश्नों को सम्मिलित करती है। यह प्रश्नावली सर्वेक्षण विधि द्वारा उत्तरदाताओं को दी गई, जिससे एक समान प्रारूप में सीधा उत्तर प्राप्त किया जा सके। प्रतिभागियों की अभिवृत्तियों और धारणाओं को सटीक रूप से मापने हेतु पाँच-बिंदु लिकर्ट मापक्रम का उपयोग किया गया, जिसमें पाँच उत्तर विकल्प सम्मिलित थे:

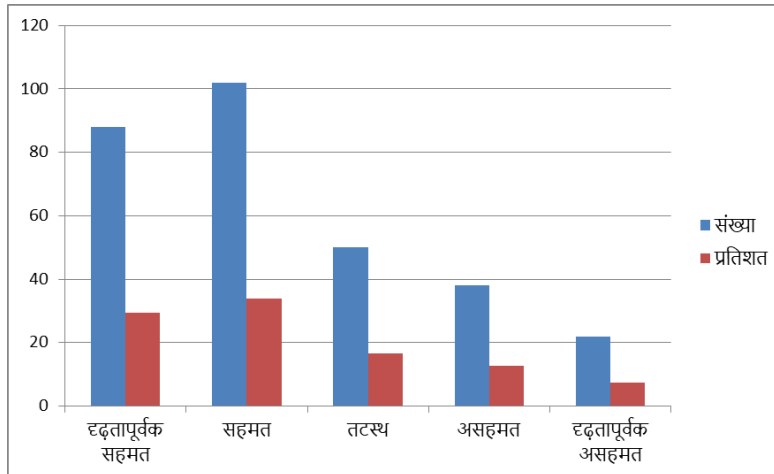
- 1 पूर्णतः सहमत,
- 2 सहमत,
- 3 तटस्थ,
- 4 असहमत,
- 5 पूर्णतः असहमत।

यह माप तकनीक व्यक्तिपरक प्रतिक्रियाओं का परिमाणीकरण करने में सहायक रही और सांख्यिकीय विश्लेषण को संभव बनाया। प्रश्नावली में जनसांख्यिकीय और धारणाधारित दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल किए गए, जो वित्तीय आवश्यकता, पारिवारिक समर्थन, नौकरी संतोष और सामाजिक दृष्टिकोण जैसे पहलुओं को समाहित करते हैं। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक एवं निष्कर्षात्मक सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया, जिससे प्रवृत्तियों की पहचान की जा सके और निष्कर्ष निकाले जा सकें। समग्र रूप से यह शोध पद्धति महिलाओं के रोजगार की समझ के लिए एक व्यवस्थित, निष्पक्ष और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है, विशेष रूप से शहरी दरभंगा के संदर्भ में।

डेटा विश्लेषण

तालिका 1 वित्तीय स्थिरता मेरे रोजगार का एक प्रमुख कारण है।

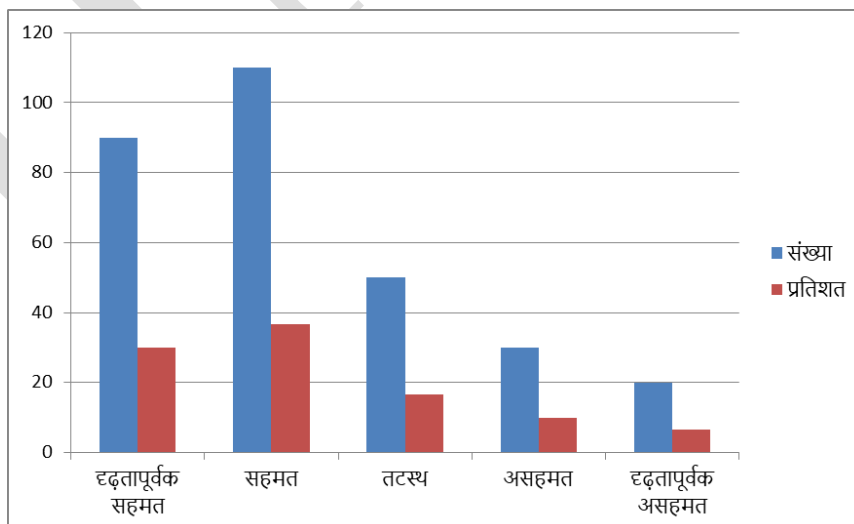
कथन	संख्या	प्रतिशत
दृढ़तापूर्वक सहमत	88	29.3
सहमत	102	34.0
तटस्थ	50	16.7
असहमत	38	12.7
दृढ़तापूर्वक असहमत	22	7.3
कुल	300	100.0



चित्र 1 वित्तीय स्थिरता मेरे रोजगार का एक प्रमुख कारण है।

तालिका 2 मुझे काम जारी रखने के लिए अपने परिवार से पर्याप्त सहयोग मिलता है।

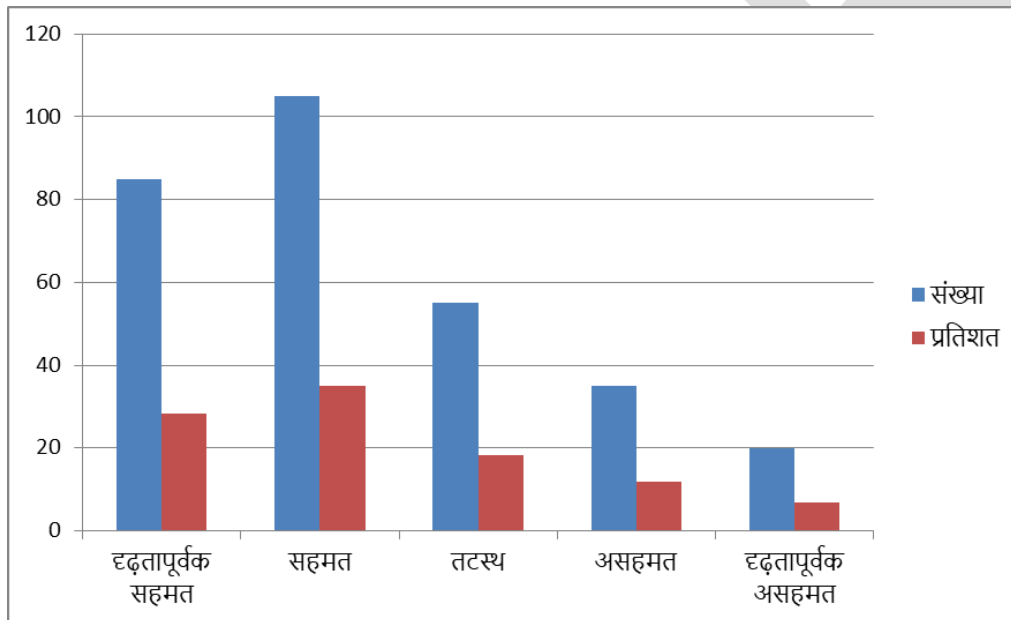
कथन	संख्या	प्रतिशत
दृढ़तापूर्वक सहमत	90	30.0
सहमत	110	36.7
तटस्थ	50	16.7
असहमत	30	10.0
दृढ़तापूर्वक असहमत	20	6.6
कुल	300	100.0



चित्र 2 मुझे काम जारी रखने के लिए अपने परिवार से पर्याप्त सहयोग मिलता है।

तालिका 3 घरेलू जिम्मेदारियों और नौकरी, दोनों को संभालना तनावपूर्ण है।

कथन	संख्या	प्रतिशत
दृढ़तापूर्वक सहमत	85	28.3
सहमत	105	35.0
तटस्थ	55	18.3
असहमत	35	11.7
दृढ़तापूर्वक असहमत	20	6.7
कुल	300	100.0



चित्र 3 घरेलू जिम्मेदारियों और नौकरी दोनों को संभालना तनावपूर्ण होता है

आँकड़ों का विश्लेषण दरभंगा नगर निगम क्षेत्र की महिला शिक्षिकाओं के रोजगार को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक और व्यक्तिगत कारकों के बारे में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

तालिका 1 दर्शाती है कि आर्थिक स्थिरता महिलाओं के रोजगार का एक प्रमुख प्रेरक कारण है। उत्तरदाताओं में से एक महत्वपूर्ण बहुमत कृ 29.3: पूर्णतः सहमत और 34.0: सहमत कृ इस बात से सहमति व्यक्त करते हैं कि वित्तीय आवश्यकता उनकी नौकरी करने का प्रमुख कारण है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक विवशता उनके कार्य निर्णय में प्रमुख भूमिका निभाती है। केवल 12.7: असहमत और 7.3: पूर्णतः असहमत हैं, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के लिए आय अर्जन करना पारिवारिक स्थिरता बनाए रखने और वित्तीय जिम्मेदारियों को निभाने हेतु आवश्यक है।

तालिका 2 महिलाओं के रोजगार निर्णयों में पारिवारिक समर्थन के महत्व को दर्शाती है। कुल 66.7: (30.0: पूर्णतः सहमत और 36.7: सहमत) उत्तरदाताओं का मानना है कि उन्हें कार्यरत रहने के लिए पर्याप्त पारिवारिक समर्थन प्राप्त है। यह समर्थन संभवतः बच्चों की देखभाल, घरेलू कार्यों में सहायता और भावनात्मक संबल जैसे पहलुओं से जुड़ा हुआ है, जो महिलाओं को नौकरी बनाए रखने में सक्षम बनाता है। केवल 16.6: उत्तरदाताओं ने असहमति या पूर्ण असहमति व्यक्त की, जिससे यह संकेत मिलता है कि यद्यपि अधिकांश महिलाओं को सहयोगात्मक पारिवारिक वातावरण प्राप्त है, फिर भी कुछ महिलाओं को पारिवारिक सहयोग की कमी या विरोध का सामना करना पड़ता है।

तालिका 3 कार्य और घरेलू जिम्मेदारियों दोनों को संभालने में आने वाले तनाव को उजागर करती है। उत्तरदाताओं का एक बड़ा भाग कृ 28.3: पूर्णतः सहमत और 35.0: सहमत कृ मानता है कि दोनों क्षेत्रों में संतुलन बनाए रखना तनावपूर्ण होता है, जो यह दर्शाता है कि अनेक कामकाजी महिलाएं “दोहरी पारी” के बोझ का अनुभव करती हैं। यद्यपि शिक्षण को महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत सुविधाजनक पेशा माना जाता है, यह निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि पेशेवर और घरेलू जिम्मेदारियों को एक साथ निभाने से भावनात्मक और शारीरिक थकान उत्पन्न होती है। केवल 18.4: उत्तरदाताओं ने इस कथन से असहमति जताई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि तनाव अधिकांश कार्यरत महिलाओं के लिए एक सामान्य अनुभव है, यहाँ तक कि शिक्षण जैसे अपेक्षाकृत स्थिर कार्य में भी।

कुल मिलाकर, इन तीनों तालिकाओं की व्याख्या यह रेखांकित करती है कि जहाँ एक ओर आर्थिक आवश्यकता और पारिवारिक समर्थन महिलाओं के रोजगार हेतु महत्वपूर्ण प्रेरक और सहायक कारक हैं, वहीं कार्य और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाए रखने का तनाव अब भी एक स्थायी चुनौती बना हुआ है। ये निष्कर्ष इस बात की आवश्यकता को उजागर करते हैं कि संस्थागत एवं पारिवारिक दोनों स्तरों पर अधिक लैंगिक-संवेदनशील नीतियाँ बनाई जाएँ ताकि कामकाजी महिलाओं पर दबाव को कम किया जा सके और उन्हें कार्यबल में पूर्ण भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि रोजगार केवल आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह शहरी मध्यवर्गीय परिवारों, विशेषकर दरभंगा की महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में, महिलाओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। तथापि, कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी और उनकी यात्रा कई परस्पर जुड़े सामाजिक-आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है। वित्तीय दबाव एक प्रमुख प्रेरक बना रहता है, जहाँ अनेक महिलाएँ घरेलू आय में योगदान देकर बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने और जीवन स्तर को स्थिर बनाए रखने का प्रयास करती हैं। फिर भी, रोजगार संबंधी निर्णय प्रायः

परिवार या समुदाय से अलग-थलग नहीं लिए जाते। पारिवारिक संरचनाकृजैसे पति का प्रोत्साहन, बाल देखभाल में सहयोग, तथा घरेलू जिम्मेदारियों का बंटवाराकृमहिलाओं की निरंतर कार्य भागीदारी को सक्षम या बाधित करने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

इसके अतिरिक्त, लिंग भूमिकाओं को लेकर सामाजिक अपेक्षाएँ और सांस्कृतिक मान्यताएँ महिलाओं पर यह दबाव डालती हैं कि वे पारिवारिक कर्तव्यों को व्यावसायिक महत्वाकांक्षाओं से ऊपर रखें। यहाँ तक कि शिक्षण जैसे सामाजिक रूप से स्वीकृत पेशों में भी, महिलाएं घर और कार्यस्थल की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखने के तनाव से गुजरती हैं, जो प्रायः उनके व्यक्तिगत कल्याण और कैरियर प्रगति की कीमत पर होता है। यह दोहरे बोझ से उत्पन्न तनाव उत्तरदाताओं के बीच एक सामान्य अनुभव के रूप में सामने आया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि घर और कार्यस्थल दोनों में अधिक सहायक वातावरण की आवश्यकता है। महिलाओं की कार्यबल में सार्थक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए केवल रोजगार के अवसर सृजित करना ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए लिंग-संवेदनशील कार्यस्थल नीतियाँ आवश्यक हैं, जिनमें लचीले कार्य समय, मातृत्व लाभ, सुरक्षित कार्य स्थितियाँ और व्यावसायिक विकास के अवसर शामिल हों। साथ ही, परिवारों को भी प्रेरित किया जाना चाहिए कि वे जिम्मेदारियों को साझा करें और ऐसा वातावरण बनाएँ जो महिलाओं की आकांक्षाओं को समर्थन दे।

ऐसी नीतियाँ जो पुरुषों को घरेलू कर्तव्यों में सहभागी बनाएँ, लिंग समानता के प्रति जागरूकता बढ़ाएँ और पुरानी सामाजिक धारणाओं को चुनौती दें, महिलाओं के रोजगार अनुभवों को सकारात्मक रूप से बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। अतः एक समग्र दृष्टिकोणकृजो संरचनात्मक और सांस्कृतिक दोनों प्रकार की बाधाओं को संबोधित करेकृशहरी मध्यवर्गीय महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें आत्मविश्वासपूर्वक व पूर्णतः कार्यबल में भाग लेने में सक्षम बनाने हेतु अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ

1. भटनागर, डी., और राजाध्यक्ष, यू. (2001). महिलाओं के कार्य और पारिवारिक भूमिकाओं के प्रति दृष्टिकोण और उनके करियर विकास पर प्रभावः भारत से एक रिपोर्ट। सेक्स रोल्स, 45(7-8), 549-565.
2. देसाई, एस., और एंड्रिस्ट, एल. (2010). भारत में लिंग लिपि और विवाह की आयु। जनसांख्यिकी, 47(3), 667-687.
3. देवी, एल. (2015). भारत में रोजगार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज, 4(5), 122-129.

4. डुप्लो, ई. (2012). महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास। जर्नल ऑफ इकोनॉमिक लिटरेचर, 50(4), 1051-1079.
5. गंगोपाध्याय, एस., और वाधवा, डब्ल्यू. (2011). भारत में महिलाओं का रोजगार रोजगार और बेरोजगारी पर हाल के एनएसएस सर्वेक्षण क्या दर्शाते हैं? भारत मानव विकास सर्वेक्षण कार्य पत्र, 11.
6. कबीर, एन. (2005). लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण तीसरी सहस्राब्दी विकास लक्ष्य का एक आलोचनात्मक विश्लेषण। लिंग और विकास, 13(1), 13-24.
7. कुमार, आर. (2017). भारत में महिलाओं के रोजगार का बदलता स्वरूप। अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 7(6), 20-27.
8. मधेस्वरन, एस., और एटवेल, पी. (2007). भारतीय शहरी श्रम बाजार में जातिगत भेदभाव राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण से साक्ष्य। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 42(41), 4146-4153.
9. मेहरा, आर., और गैमेज, एस. (1999). दक्षिण एशिया में महिलाओं के रोजगार के रुझान, चुनौतियाँ और अवसर। इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमेन (ज्‌सी)।
10. नायर, यू. (2013). भारत में शिक्षण पेशेवर एक लैंगिक विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज इन डेवलपिंग सोसाइटीज, 1(2), 163-176.
11. पटेल, वी. (2010). शहरी भारत में महिलाएँ और कार्य। इंडियन जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज, 17(3), 471-495.
12. राजू, एस. (2011). लैंगिक वास्तविकताएँ भारत में महिला श्रमिकों की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की खोज। सामाजिक परिवर्तन, 41(3), 375-391.
13. शर्मा, के. (2020). भारतीय शहरी मध्यम वर्ग की महिलाओं में रोजगार के रुझान एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य। जर्नल ऑफ कंटेम्प러리 रिसर्च, 9(4), 45-55।
14. सिन्हा, ए. (2016)। भारत में पारिवारिक सहयोग और कामकाजी महिलाएँ एक समाजशास्त्रीय समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस रिसर्च, 4(2), 20-25।
15. विश्व बैंक। (2022)। महिलाएँ, व्यवसाय और कानून 2022। विश्व बैंक समूह।